RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452 Raaso
Refreed Journal

रासो

अन्तर्विषयी त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-16, अंक-4, सितम्बर अक्टूबर नवम्बर 2023

रासो
त्रैमासिक शोध पत्रिका
2005
॥ स्वस्ति पन्थामनु चरेम् ॥

RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452Raaso
Refreed Journal

रासो

इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-16 अंक - 4 सितम्बर-अक्टूबर-नवम्बर-2023

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

निदेशक
कॉम्पिटिशन प्लस संस्थान, ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूशन्स, अजमेर (राजस्थान)

संरक्षक

* **प्रो. जे. पी. शर्मा** - पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सलाहकार मण्डल

* **प्रो. विभा उपाध्याय** - प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
* **नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** - प्रसिद्ध साहित्यकार तथा संस्कृति चिंतक, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
* **प्रो. टी.के. माथुर** - पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
* **डॉ. रमेश अग्रवाल** - पूर्व स्थानीय सम्पादक, दैनिक भास्कर, अजमेर (राजस्थान)
* **डॉ. गौरव बिस्सा** - सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रबंध अध्ययन विभाग, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
* **डॉ. बीना शर्मा** - पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
* **प्रो. शोभा आर. मिश्रा** - आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, माधव महाविद्यालय, उज्जैन
* **डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी** - पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

☆ उप सम्पादक
डॉ. रीता पारीक
प्राचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. मृत्युंजय शर्मा
सह-आचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ सहायक सम्पादक
डॉ. निष्काम शर्मा

☆ शब्द संयोजन
मुकेश कुमार माहेश्वरी

☆ सम्पादकीय/सचिव
व्यवस्थापकीय कार्यालय
सृजन संस्थान,
आचमन, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर-06
दूरभाष : 0145-2426610
e-mail : rasoajmjournal@gmail.com

☆ प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
सृजन संस्थान,
द्वारा आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर

☆ मुद्रक :
मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स,
केसरगंज, अजमेर

☆ कम्प्यूटराइज्ड सेटिंग :
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स
132, पंचवटी कॉलोनी,
अजमेर दूरभाष : 0145-2442701

सहयोग दर

* वार्षिक सदस्यता - 500 रु. (चार अंक) संस्थाओं हेतु - 600 रु. (चार अंक)
कृपया चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रकाशक, आचमन पब्लिकेशन्स, अजमेर- 305006 के नाम भेजें।

प्रकाशक-श्रीमती पुष्पा शर्मा, 51/1509, वेद विहार, लोहाखान, अजमेर द्वारा मैसर्स सृजन संस्थान, अजमेर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रक-श्रीमती उषा गर्ग द्वारा मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित।

वेदों में तीन देवियों का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक विश्लेषण

आराधना माहेश्वरी
सहायक आचार्य (समाज विज्ञान विभाग)
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

वैदिक साहित्य में तीन प्रमुख देवियाँ हैं: इडा, सरस्वती और मही, जिन्हें भारती भी कहा जाता है। ये तीनों देवियाँ अक्सर एक समूह के रूप में कार्य करती हैं और यज्ञ, कर्म तथा मानव कल्याण में सक्रिय रहती हैं। ऋग्वेद और यजुर्वेद में इनका विस्तृत वर्णन मिलता है। इडा मानसिक शक्ति और बुद्धि का प्रतिनिधित्व करती हैं, सरस्वती वाणी, ज्ञान और अंतरिक्षीय शक्ति की देवी हैं, जबकि मही या भारती प्राण शक्ति और द्युलोक की प्रतिनिधि हैं। इन तीनों देवियों का कार्य केवल यज्ञों तक सीमित नहीं है, बल्कि ये तीनों लोकों और उनके तत्त्वों का समन्वय भी करती हैं।

ऋग्वेद 1.13.9 में कहा गया है, 'इडा, सरस्वती, मही, तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः। बर्हिः सीदन्त्वस्त्रिधः।' इस श्लोक में इन तीनों देवियों को हमारे अस्तित्व में व्याप्त और तीनों लोकों में फैलती हुई बताया गया है। यजुर्वेद 20.43 में उल्लेख है, 'तिस्त्रो देवीः.. सरस्वतीडा देवी भारती विश्वतूर्तिः।' इसका अर्थ है कि ये तीनों देवियाँ सर्वत्र फैली हुई हैं। सरस्वती वाणी और ज्ञान की देवी हैं, और मही या भारती प्राण तत्त्व की प्रतिनिधि हैं। यजुर्वेद 20.63 में कहा गया है, 'तिस्त्रस्त्रेधा सरस्वत्यश्विना भारतीडा। सोममिन्द्राय सुषुवुर्मदम्।' यह श्लोक दर्शाता है कि ये तीनों देवियाँ इन्द्र को सोमरस प्रदान करती हैं और यज्ञ में ऊर्जा का संचार करती हैं। यजुर्वेद 29.8 में उल्लेख है कि सूर्य द्वारा भारती यज्ञ में प्राण शक्ति का संचालन करती हैं, रुद्र द्वारा सरस्वती वाणी और ज्ञान का संचालन करती हैं, और वसु द्वारा इडा मानसिक शक्ति का संचार करती हैं। इस प्रकार तीनों देवियों की उपस्थिति यज्ञ को सफल और फलदायी बनाती है।

तीनों देवियों का लोक और तत्त्व के अनुसार स्वरूप स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भारती (मही) सूर्य की अधिष्ठाता हैं और द्युलोक का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनका तत्त्व प्राण है, और वे जीवन शक्ति तथा यज्ञ में ऊर्जा का संचालन करती हैं। सरस्वती रुद्र की अधिष्ठाता हैं और अंतरिक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनका तत्त्व वाक्तत्त्व है, और वे ज्ञान, वाणी और संवाद की शक्ति का संचालन करती हैं। इडा वायु (वसु) की अधिष्ठाता हैं और भूलोक का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनका तत्त्व मन है, और वे मन और बुद्धि का संचालन करती हैं। तीनों लोकों और तत्त्वों के इस प्रकार के संबंध से मानव जीवन और यज्ञों में समन्वय स्थापित होता है।

प्रतीकात्मक दृष्टि से देखा जाए तो इडा मन, बुद्धि और मानसिक क्रियाओं की शक्ति का प्रतीक हैं। वे यज्ञ और कर्मों में मानसिक संकल्प और एकाग्रता प्रदान करती हैं। सरस्वती वाणी, ज्ञान, संगीत और विज्ञान की देवी हैं। वे अंतरिक्ष का प्रतीक हैं क्योंकि ज्ञान और वाणी की शक्ति सभी दिशाओं में व्याप्त होती

शोध-पत्र में उल्लिखित सन्दर्भ एवं विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं।

है। यज्ञों में वे मंत्रों और विधियों के सही उच्चारण और प्रभाव को सुनिश्चित करती हैं। मही या भारती प्राण शक्ति और ऊर्जा का प्रतीक हैं। वे द्युलोक का प्रतिनिधित्व करती हैं और यज्ञों में प्राणशक्ति का संचालन करती हैं। वे मानव जीवन और समस्त प्राणी जगत की जीवंतता सुनिश्चित करती हैं।

तीनों देवियाँ यज्ञ में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इडा मानसिक संकल्प और ध्यान स्थापित करती हैं, सरस्वती मंत्रों और ज्ञान का प्रवाह सुनिश्चित करती हैं, और भारती प्राण शक्ति और ऊर्जा का संचार करती हैं। इस प्रकार, तीनों देवियाँ मन, वाणी और प्राण के माध्यम से यज्ञ की सफलता और कल्याण सुनिश्चित करती हैं।

तीन देवियों का आध्यात्मिक स्वरूप :

वैदिक परंपरा में वर्णित तीन देवियाँ—इडा, भारती (मही) और सरस्वती—केवल बाह्य देवतारूप नहीं हैं, अपितु उनका एक गहन आध्यात्मिक और योगात्मक स्वरूप भी है। आध्यात्मिक दृष्टि से ये तीनों देवियाँ मानव शरीर में प्रवाहित होने वाली तीन प्रमुख सूक्ष्म शक्तियों—इडा, पिंगला और सुषुम्णा—का प्रतीकात्मक रूप हैं। इडा को इडा ही कहा जाता है, पिंगला को भारती या मही कहा गया है और सुषुम्णा को सरस्वती के नाम से अभिहित किया गया है। इसी कारण वैदिक देवियाँ और योगशास्त्र की नाड़ियाँ परस्पर एक-दूसरे से गहराई से संबद्ध दिखाई देती हैं।

परंपरा में इडा को गंगा, पिंगला को यमुना और सुषुम्णा को सरस्वती कहा गया है। यह तुलना केवल भौगोलिक नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक है। जैसे गंगा और यमुना के बीच अदृश्य रूप से सरस्वती का प्रवाह माना गया है, वैसे ही इडा और पिंगला के मध्य सुषुम्णा का सूक्ष्म प्रवाह होता है। सुषुम्णा या सरस्वती को मध्यस्थ शक्ति माना गया है। यही केन्द्रीय शक्ति है, और इसी से इडा तथा पिंगला दोनों का उद्गम होता है। गणित और विज्ञान की भाषा में इस केन्द्रीय शक्ति को न्यूक्लिअस अथवा शून्य कहा जा सकता है, जो स्वयं स्थिर रहते हुए भी समस्त गतिविधियों का आधार होता है।

इस केन्द्रीय शक्ति की ऋणात्मक अभिव्यक्ति इडा है। इडा को सोमतत्त्व या सोमीय शक्ति कहा गया है। यह चन्द्रस्वरूप है और शीतलता, कोमलता तथा संतुलन प्रदान करती है। इडा मानव चेतना में माधुर्य, करुणा, सहानुभूति, सद्भाव और प्रेम का संचार करती है। यह शक्ति मन और भावनाओं से गहराई से जुड़ी हुई है। इसके विपरीत, इसी केन्द्रीय शक्ति की धनात्मक अभिव्यक्ति पिंगला या भारती है। पिंगला को अग्नितत्त्व या आग्नेय शक्ति कहा गया है। यह सौरस्वरूप है, प्राणशक्ति का प्रतिनिधित्व करती है और शरीर में ऊर्जा, सक्रियता तथा उत्साह का संचार करती है। इडा शरीर के बाएँ पक्ष में प्रवाहित होती है, जबकि पिंगला दाएँ पक्ष में प्रवाहित होती है।

इन तीनों शक्तियों का पारस्परिक संबंध अहोरात्र के स्वरूप से भली-भाँति समझा जा सकता है। जैसे दिन, रात और सन्ध्या—तीनों मिलकर अहोरात्र का निर्माण करते हैं, वैसे ही इडा, पिंगला और सुषुम्णा जीवन-प्रवाह को संचालित करती हैं। दिन अहोरात्र का आग्नेय या उष्ण पक्ष है, जो पिंगला का प्रतीक है। रात सोमीय या शीतल पक्ष है, जो इडा का प्रतीक है। सन्ध्या इन दोनों की संधि-वेला है, न पूर्णतः उष्ण और न पूर्णतः शीतल। प्रातः और सायं की सन्ध्याएँ मध्यस्थ अवस्था को दर्शाती हैं, ठीक वैसे ही जैसे सुषुम्णा इडा और पिंगला के बीच संतुलन स्थापित करती है। अहोरात्र के लिए जैसे तीनों आवश्यक हैं और किसी

एक को भी छोड़ा नहीं जा सकता, वैसे ही जीवन-ऊर्जा के लिए इडा, पिंगला और सुषुम्णा तीनों का समन्वय अनिवार्य है।

मानव शरीर को जीवित और संतुलित बनाए रखने के लिए इन तीनों शक्तियों की समष्टि आवश्यक मानी गई है। यदि इडा और पिंगला तो सक्रिय हों, पर सुषुम्णा निष्क्रिय रहे, तो चेतना उच्च अवस्था में नहीं पहुँच सकती। योग-दर्शन में आत्मोन्नति और ब्रह्मबोध का मार्ग सुषुम्णा के जागरण से ही प्रशस्त होता है, क्योंकि वही दोनों ध्रुवों के बीच संतुलन स्थापित करती है।

यह त्रिविध तत्त्व केवल मानव शरीर तक सीमित नहीं है, बल्कि संपूर्ण सृष्टि में सर्वत्र विद्यमान है। सृष्टि का सूक्ष्मतम रूप परमाणु भी इसी त्रितत्त्वात्मक सिद्धांत पर आधारित है। परमाणु में धनात्मक शक्ति प्रोटॉन के रूप में, ऋणात्मक शक्ति इलेक्ट्रॉन के रूप में और मध्यस्थ या केन्द्रीय शक्ति न्यूट्रॉन के रूप में विद्यमान रहती है। इन तीनों का समन्वित स्वरूप ही परमाणु को स्थिर और क्रियाशील बनाता है। इसी प्रकार मानव शरीर और चेतना में इन तीन शक्तियों के प्रतिनिधि इडा, पिंगला और सुषुम्णा हैं, जिन्हें वैदिक भाषा में इडा, भारती (मही) और सरस्वती कहा गया है।

सरस्वती का स्वरूप :

सरस्वती को वैदिक परंपरा में ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है। यही सरस्वती मनुष्य को अज्ञानग्रस्त पशु-प्रवृत्ति से पृथक करती है और उसे विवेकशील प्राणी बनाती है। मानव को ईश्वर की कृपा से जो ज्ञानशक्ति प्राप्त हुई है, वही उसे कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध कराती है। इसी विवेक के आधार पर मनुष्य अपने आचरण को शुद्ध करता हुआ देवत्व की ओर अग्रसर होता है। इस प्रकार सरस्वती केवल विद्या की देवी नहीं, बल्कि मानव को ऊर्ध्वगामी बनाने वाली चेतनाशक्ति हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थों में सरस्वती का स्वरूप अत्यंत सूक्ष्म और दार्शनिक रूप में निरूपित किया गया है। इन ग्रन्थों के अनुसार वाक्तत्त्व या वाक्-शक्ति ही सरस्वती है। शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट कहा गया है– 'वाक् सरस्वती', ऐतरेय ब्राह्मण में 'वागेव सरस्वती' तथा कौषीतकि और तांड्य ब्राह्मणों में भी 'वाग् वै सरस्वती' कहा गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि सरस्वती किसी सीमित रूप वाली देवी नहीं हैं, बल्कि वह स्वयं वाणी का तत्त्व हैं, जो ज्ञान की अभिव्यक्ति का माध्यम है।

वाक्तत्त्व को सरस्वती कहने का गूढ़ अभिप्राय यह है कि वाणी मूलतः पराशक्ति का स्वरूप है। यह शक्ति अनन्त, असीम और सर्वव्यापक है, ठीक वैसे ही जैसे समुद्र सर्वत्र जलराशि के रूप में फैला हुआ होता है। यही पराशक्ति सृष्टि में समष्टि रूप से व्याप्त है और मानव शरीर में व्यष्टि रूप में प्रकट होती है। मनुष्य के शरीर में यह वाक्तत्त्व ज्ञानतन्तुओं के रूप में संपूर्ण शरीर में व्याप्त रहता है। ये ज्ञानतन्तु ही सभी ज्ञानेन्द्रियों के कार्यों का आदान-प्रदान करते हैं और समस्त मानवीय चेष्टाएँ इन्हीं के क्षेत्र में आती हैं। इस प्रकार सरस्वती मानव चेतना की आधारशिला हैं।

ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में आया एक प्रसिद्ध मन्त्र सरस्वती के स्वरूप और कार्यों पर विशेष प्रकाश डालता है। इस मन्त्र में सरस्वती को ऐसी दिव्य शक्ति कहा गया है, जिनकी ज्ञानधारा निरन्तर बहती रहती है और जो समस्त सृष्टि का पोषण करती हैं। वे कल्याण करने वाली हैं, सभी श्रेष्ठ पदार्थों को शक्ति प्रदान करती हैं, रत्नों को धारण करती हैं और उदार दानी हैं। यहाँ 'स्तन' और 'दुग्ध' का रूपक

प्रयोग कर यह बताया गया है कि जैसे माता अपने स्तनों से अमृतमय दुग्ध प्रदान करती है, वैसे ही सरस्वती ज्ञान का अमृत निरन्तर प्रवाहित करती हैं।

सरस्वती की ज्ञानधारा कभी रुकती नहीं है। जो जितना ज्ञान प्राप्त करना चाहता है, उतना प्राप्त कर सकता है। वह किसी के लिए सीमित नहीं है और न ही किसी से पक्षपात करती है। वह सभी श्रेष्ठ पदार्थों को शक्ति देती है और उन्हें पुष्ट करती है। वे धन की स्रोत कही गई हैं, परंतु यहाँ धन का अर्थ केवल भौतिक संपत्ति नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि ज्ञान के द्वारा ही सभी कामनाओं की पूर्ति होती है। ज्ञान से युक्त व्यक्ति को न केवल भौतिक साधन प्राप्त होते हैं, बल्कि यश, सम्मान और आत्मसंतोष भी प्राप्त होता है।

ऋग्वेद और यजुर्वेद के मंत्रों में सरस्वती के स्वरूप का जो चित्र उभरकर आता है, वह अत्यंत व्यापक, सूक्ष्म और आध्यात्मिक है। इन मंत्रों के अनुसार सरस्वती पवित्र बनाने वाली शक्ति हैं। वह केवल बाह्य शुद्धि तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि मनुष्य की बुद्धि, विचार और चेतना को शुद्ध करती हैं। सरस्वती शक्ति की मूल स्रोत हैं और वही शक्ति मनुष्य को जीवन में अभीष्ट की प्राप्ति की ओर ले जाती है। वह सद्विचारों की जननी हैं और बुद्धि को सही दिशा में प्रेरित करती हैं। इसीलिए उन्हें बुद्धिप्रदायिनी और चेतना को जाग्रत करने वाली देवी कहा गया है।

ऋग्वेद में कहा गया है कि सरस्वती पावका हैं, अर्थात् वह शुद्ध करने वाली हैं। वह वाजों अर्थात् शक्तियों से युक्त हैं और बुद्धि को धनस्वरूप बनाती हैं। 'चोदयित्री सूनृतानां' कहकर उन्हें सत्य और मधुर वाणी को प्रेरित करने वाली कहा गया है। वह सुमतियों को चेतन करती हैं, अर्थात् सद्बुद्धि को जाग्रत करती हैं। 'महो अर्णः सरस्वती' कहकर उन्हें महान समुद्र के समान बताया गया है। यह उपमा इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि सरस्वती ज्ञान का महासागर हैं। जैसे समुद्र में असंख्य तरंगें होती हैं, वैसे ही ज्ञान के असंख्य रूप सरस्वती में निहित हैं। वह अपने प्रकाश के द्वारा मार्गदर्शन करती हैं और समस्त बुद्धि में व्याप्त रहती हैं। इसका अभिप्राय यह है कि कोई भी ज्ञान, कोई भी विवेक और कोई भी सद्बुद्धि सरस्वती से पृथक नहीं है।

इन मंत्रों का तात्पर्य यह है कि सरस्वती सद्बुद्धि प्रदान करके मनुष्य को पवित्र बनाती हैं। वही सद्विचारों की जननी हैं और वही आत्मिक शक्ति का मूल स्रोत हैं। जीवन में पुरुषार्थ, सामर्थ्य और सफलता की प्राप्ति भी उसी शक्ति से होती है। सरस्वती को महासमुद्र के तुल्य इसलिए कहा गया है क्योंकि वह ज्ञान के कण-कण में व्याप्त हैं। आवश्यकता के अनुसार वह उचित सूझ-बूझ देकर मनुष्य का मार्गदर्शन करती हैं और अज्ञान के अंधकार में प्रकाश का कार्य करती हैं। इस कारण उन्हें ज्योतिर्मयी कहा गया है।

यजुर्वेद में सरस्वती के स्वरूप को और अधिक क्रियात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। वहाँ उन्हें कामधेनु कहा गया है, जो सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली है। इसका अर्थ यह है कि ज्ञान के द्वारा मनुष्य की सभी उचित आकांक्षाएँ पूर्ण होती हैं। यजुर्वेद यह भी बताता है कि सरस्वती अश्विनी देवों को शक्ति प्रदान करती हैं। अश्विनीकुमार चिकित्सा और आरोग्य के देवता माने जाते हैं, अतः सरस्वती को वैद्य का स्वरूप भी प्राप्त होता है। वह दोषों, दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को दूर करने वाली शक्ति हैं। यह शुद्धिकरण केवल शरीर का नहीं, बल्कि मन और बुद्धि का भी है।

यजुर्वेद के अनुसार सरस्वती इन्द्र, अर्थात् आत्मा या जीवात्मा को सोम या सोमीय गुण प्रदान

करती हैं। सोमीय गुण का अर्थ है शीतलता, संतुलन और आंतरिक बल। इस प्रकार सरस्वती आत्मा को शक्ति प्रदान करती हैं। वह शरीर के रोगों को दूर करके उसकी रक्षा करती हैं और उसे हृष्ट-पुष्ट बनाती हैं। यहाँ सरस्वती का स्वरूप केवल ज्ञान की देवी तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि वह जीवन, स्वास्थ्य, शक्ति और चेतना की रक्षक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित होती हैं।

सरस्वती और अश्विनी :- यजुर्वेद में सरस्वती और अश्विनी देवों के बीच गहन और अविच्छिन्न सम्बन्ध का वर्णन किया गया है। ये दोनों शक्तियाँ परस्पर सहयोग से मानव शरीर की रचना, पोषण और संचालन करती हैं। यजुर्वेद के उन्नीसवें अध्याय में मंत्र 81 से 95 तक, कुल पंद्रह मंत्रों में यह स्पष्ट किया गया है कि शरीर के प्रत्येक अंग, अवयव और तंत्र की संरचना में सरस्वती और अश्विनी देवों की संयुक्त भूमिका है। वे केवल शारीरिक अंगों की रचना ही नहीं करते, बल्कि उनमें चेतना, शक्ति और कार्यक्षमता भी स्थापित करते हैं।

यजुर्वेद (19.93) **'अंगान्यात्मन् भिषजा तदश्विनाऽऽमानमङ्गैः समधात् सरस्वती'** में कहा गया है कि अश्विनी देव भिषक् अर्थात् दिव्य चिकित्सक के रूप में शरीर के अंगों की संरचना करते हैं और सरस्वती उन अंगों को प्राणशक्ति से संयुक्त कर आत्मा के योग्य बनाती हैं। मंत्र में यह भाव निहित है कि अश्विनी अंगों की भौतिक रचना करते हैं, जबकि सरस्वती उनमें जीवन, चेतना और संगठन का संचार करती हैं। इस प्रकार शरीर केवल एक यांत्रिक संरचना नहीं रहता, बल्कि जीवात्मा का योग्य आवास बनता है।

यजुर्वेद (20.80) **'अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्'** में यह विशेष रूप से कहा गया है कि अश्विनी देव नेत्रों को तेज और ज्योति प्रदान करते हैं, जबकि सरस्वती प्राण और वीर्य प्रदान करती हैं। इसका अर्थ यह है कि अश्विनी देव शरीर को कार्यशील और सुदृढ़ बनाते हैं तथा सरस्वती उसमें जीवन-शक्ति और सृजनात्मक ऊर्जा का संचार करती हैं। नेत्रों की ज्योति, प्राण का प्रवाह और वीर्य का संरक्षण—ये तीनों जीवन के मूल आधार हैं, और इन तीनों में सरस्वती और अश्विनी का समन्वय दिखाई देता है।

यजुर्वेद के इक्कीसवें अध्याय में मंत्र 48 से 56 तक विस्तार से वर्णन मिलता है कि किस प्रकार सरस्वती और अश्विनी देव मिलकर इन्द्र, अर्थात् जीवात्मा, को विविध शक्तियाँ प्रदान करते हैं। इन मंत्रों के अनुसार ये देव नेत्रों में तेज, प्रकाश और देखने की शक्ति देते हैं, वाणी में बोलने की क्षमता प्रदान करते हैं, कानों में सुनने की शक्ति स्थापित करते हैं, हृदय में प्रकाश, बुद्धि और विवेक का संचार करते हैं, नाभि में केन्द्रीय शक्ति को प्रतिष्ठित करते हैं तथा शरीर में ओज, बल, स्फूर्ति और पराक्रम उत्पन्न करते हैं। इस समस्त प्रक्रिया से शरीर जीवात्मा के योग्य उपकरण बनता है।

यजुर्वेद (21.55) **'रेता ने रूपममृतं जनित्रमिन्द्राय'** में शरीर को जीवात्मा का रथ कहा गया है। इस रथ को ढोने और चलाने वाली शक्तियाँ सरस्वती और अश्विनी देव हैं। वे जीवात्मा को अमृत तुल्य वीर्य प्रदान करते हैं, जिससे जीवन की सभी क्रियाएँ संचालित होती हैं। यहाँ रथ का रूपक अत्यंत गूढ़ है। रथ स्वयं नहीं चलता, उसे चलाने के लिए शक्ति, दिशा और नियंत्रण की आवश्यकता होती है। यही कार्य सरस्वती और अश्विनी देव करते हैं।

इस मंत्र का गूढ़ अभिप्राय यह है कि मानव शरीर का संचालन इडा, पिंगला और सुषुम्णा—इन

तीनों शक्तियों के माध्यम से होता है। अश्विनी देव इडा और पिंगला के क्रियात्मक पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि सरस्वती सुषुम्णा या केन्द्रीय चेतनाशक्ति का स्वरूप हैं। ये तीनों मिलकर शरीर को शक्ति, स्फूर्ति, बल, ओज और पराक्रम प्रदान करते हैं। यही शक्तियाँ आत्मा को अमृत समान वीर्य देती हैं, जिससे आत्मा की समस्त गतिविधियाँ, अनुभूतियाँ और कर्म संभव हो पाते हैं।

सरस्वती और अश्विनी द्वारा वस्त्र बुनाई :- यजुर्वेद में सरस्वती के कर्तव्यों का वर्णन करते हुए एक अत्यंत सुंदर और गूढ़ आलंकारिक उपमा दी गई है, जिसमें मानव शरीर की रचना को वस्त्र-बुनाई की प्रक्रिया के रूप में समझाया गया है। यहाँ सरस्वती और अश्विनीकुमारों का संयुक्त कार्य शरीर की संरचना और संचालन से जोड़ा गया है। अश्विनीकुमारों को प्राण और अपान के रूप में देखा गया है, जो संपूर्ण शरीर में ताने-बाने की भाँति फैले हुए हैं, और सरस्वती उस ताने-बाने को समन्वित करके शरीररूपी वस्त्र का निर्माण करती हैं।

यजुर्वेद के अनुसार शरीर कोई जड़ संरचना नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत, सूक्ष्म और सुव्यवस्थित रचना है। जैसे किसी वस्त्र के निर्माण के लिए ताना और बाना दोनों आवश्यक होते हैं, वैसे ही शरीर के निर्माण और जीवन-क्रिया के लिए प्राण और अपान अनिवार्य हैं। प्राण को ऊपर की ओर जाने वाली शक्ति माना गया है और अपान को नीचे की ओर प्रवाहित होने वाली शक्ति। ये दोनों शक्तियाँ शरीर के भीतर सीधी और तिरछी धाराओं के समान निरंतर गतिशील रहती हैं। इनकी समुचित व्यवस्था के बिना शरीर का अस्तित्व संभव नहीं है।

सरस्वती का कार्य इन दोनों शक्तियों को समन्वित करना है। वह केवल ज्ञान और वाणी की देवी ही नहीं हैं, बल्कि जीवन-शक्ति की संगठनकर्ता भी हैं। यजुर्वेद (19.82) **'तदश्विना भिषजा.... सरस्वती वयति पेशो अन्तरम'** में कहा गया है कि अश्विनी देव भिषक् अर्थात् चिकित्सक रूप में कार्य करते हैं और सरस्वती उस अंतरंग और सूक्ष्म वस्त्र को बुनती हैं। यहाँ 'वयति पेश: अन्तरम्' का अर्थ है कि सरस्वती शरीर के भीतर के सूक्ष्म स्वरूप को बुनती हैं। यह बुनाई भौतिक नहीं, बल्कि प्राणिक और चेतनात्मक है।

यजुर्वेद (19.83) **'सरस्वती मनसा.... नासत्याभ्यां वयति दर्शतं वपु:'** में यह कहा गया है कि सरस्वती मन के द्वारा अश्विनीकुमारों के साथ मिलकर दर्शनीय शरीररूप का निर्माण करती हैं। इसका तात्पर्य यह है कि शरीर केवल प्राण-अपान की यांत्रिक व्यवस्था से नहीं बनता, बल्कि उसमें मन, चेतना और बुद्धि का भी समावेश होता है। सरस्वती यहाँ मन और ज्ञान की शक्ति के रूप में कार्य करती हैं, जो प्राण और अपान की धाराओं को संतुलित करके एक सुंदर, कार्यक्षम और जीवंत शरीर का निर्माण करती हैं।

इस पूरे वर्णन में शरीर को इन्द्र, अर्थात् जीवात्मा, के लिए बुना गया वस्त्र कहा गया है। जैसे वस्त्र आत्मा को ढकता है और उसे कार्य करने योग्य बनाता है, वैसे ही शरीर आत्मा का साधन है। इस वस्त्र को बुनने वाले अश्विनीकुमार प्राण और अपान हैं, और इस बुनाई की सूत्रधार सरस्वती हैं। वही इस शरीर को ऐसा रूप देती हैं कि आत्मा उसमें रहकर अपने सभी कर्म, अनुभव और पुरुषार्थ कर सके।

सरस्वती के कार्य :

ऋग्वेद और यजुर्वेद में सरस्वती को केवल वाणी या ज्ञान की देवी के रूप में ही नहीं, बल्कि मानव चेतना, बुद्धि, विवेक, स्वास्थ्य और समग्र जीवन-व्यवस्था की अधिष्ठात्री शक्ति के रूप में निरूपित

किया गया है। वैदिक दृष्टि में सरस्वती मानव के आन्तरिक विकास की नियन्ता हैं। वे बुद्धि को प्रेरित करती हैं, निर्णय-शक्ति प्रदान करती हैं और मनुष्य को सत् और असत् के भेद का विवेक कराती हैं। इसी कारण उन्हें 'सूनृतानां चोदयित्री' कहा गया है, अर्थात् वे सद्विचारों की जननी और प्रेरक हैं। सरस्वती की प्रेरणा से ही मनुष्य के भीतर शुभ संकल्प उत्पन्न होते हैं और बुद्धि सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त होती है।

ऋग्वेद में सरस्वती को 'पावका' कहा गया है, जिसका अभिप्राय है कि वे मनुष्य को पवित्र बनाती हैं। यह पवित्रता केवल बाह्य आचरण तक सीमित नहीं है, बल्कि विचार, भावना और चेतना की शुद्धि से सम्बन्धित है। सरस्वती दुर्गुणों, दुर्भावनाओं और कुत्सित प्रवृत्तियों को हटाकर सद्गुणों की स्थापना करती हैं। यही कारण है कि उन्हें शक्ति का स्रोत कहा गया है। यह शक्ति केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक, नैतिक और आत्मिक शक्ति है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करता है और अपने मनोरथों की पूर्ति करता है।

ऋग्वेद और यजुर्वेद में सरस्वती को एक महान् सरोवर या महासागर के रूप में भी वर्णित किया गया है। इस सरोवर में सदा घृत या स्निग्ध तत्त्व भरा रहता है। वैदिक ऋषियों ने इसे प्रतीकात्मक भाषा में मस्तिष्क की जीवनदायी व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया है। आधुनिक विज्ञान की भाषा में यह मस्तिष्क के चार गर्तों या वेंट्रिकिल्स से सम्बन्धित माना गया है, जिनके माध्यम से मस्तिष्क और मेरुतन्त्र को जीवनदायी रस प्राप्त होता है। यही रस मस्तिष्क को सक्रिय, स्फूर्त और विवेकशील बनाए रखता है। यदि यह व्यवस्था बाधित हो जाए तो मस्तिष्क की क्रियाशीलता समाप्त हो जाती है। इसी कारण संस्कृत साहित्य में इसे 'ब्राह्म सरः' या मानसरोवर कहा गया है, जहाँ से चेतना और विवेक का प्रवाह होता है।

सरस्वती का एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य आत्मा और शरीर को शक्ति प्रदान करना है। यजुर्वेद के अनुसार वे इन्द्र, अर्थात् जीवात्मा, को आत्मिक बल देती हैं और अश्विनीकुमारों के सहयोग से शरीर को ऊर्जा, ओज और सामर्थ्य प्रदान करती हैं। इडा और पिंगला नाड़ियों के माध्यम से जब ज्ञान और प्राणशक्ति का संतुलन होता है, तब मनुष्य के भीतर दृढ़ इच्छाशक्ति, आत्मबल और कार्यक्षमता का विकास होता है। इस विवेकपूर्ण चेतना के कारण मनुष्य अपने कर्तव्यों को पहचानता है, सन्मार्ग पर अग्रसर होता है और दुर्गुणों का त्याग करके सद्गुणों को अपनाता है। इसका परिणाम यह होता है कि उसके जीवन में धन-धान्य, वैभव, तेज और आरोग्य की वृद्धि होती है।

यजुर्वेद में सरस्वती को 'भिषक्' अर्थात् वैद्य भी कहा गया है। इसका गूढ़ अर्थ यह है कि सरस्वती मानव के रोगों की मूल चिकित्सा करती हैं। वैदिक दृष्टि में अधिकांश रोग प्रज्ञापराध, अर्थात् बुद्धि-दोष से उत्पन्न होते हैं। दूषित विचार, दुर्भावनाएँ और मानसिक विकार ही शारीरिक रोगों के मूल कारण हैं। सरस्वती ज्ञान और विवेक प्रदान करके मनुष्य को इन दूषित प्रवृत्तियों से मुक्त करती हैं। प्राणायाम, संयम और प्राकृतिक जीवन-पद्धति के द्वारा वे मानव को नीरोग और स्वस्थ बनाती हैं। इस प्रकार सरस्वती की चिकित्सा बाह्य औषधि पर नहीं, बल्कि चेतना-शुद्धि पर आधारित है।

सरस्वती को शरीर की रक्षक शक्ति भी कहा गया है। यजुर्वेद और अथर्ववेद में वर्णन है कि वे शरीर के दोषों, क्षत-व्रण और आन्तरिक दुर्बलताओं को अपने घृत या सोमतत्त्व से भरकर स्वास्थ्य प्रदान करती हैं। यह सोमतत्त्व जीवन-ऊर्जा और पुनर्जीवन की शक्ति का प्रतीक है, जिससे शरीर सुदृढ़ और संतुलित

बना रहता है।

यजुर्वेद में सरस्वती में पाँच नदियों के संगम का जो वर्णन है, उसका भौगोलिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अर्थ है। ये पाँच नदियाँ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, जो अपने समस्त ज्ञानतन्तुओं सहित सरस्वती, अर्थात् सुषुम्णा नाड़ी, में आकर मिलती हैं। यहाँ बुद्धि उस ज्ञान को ग्रहण करके निर्णय करती है और कर्मेन्द्रियों को कार्य करने का निर्देश देती है। इस प्रकार सरस्वती पाँच रूपों में विभक्त होकर सम्पूर्ण जीवन-व्यवस्था को संचालित करती हैं।

अथर्ववेद में सरस्वती में सात नदियों के संगम का उल्लेख मिलता है। ये सात नदियाँ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि हैं। इनमें इडा और पिंगला दो मुख्य नदियाँ हैं, जो ऋणात्मक और धनात्मक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनके संयोग से ही शरीर में विद्युत-सदृश ऊर्जा उत्पन्न होती है, जिससे यह सम्पूर्ण देह-यंत्र कार्य करता है। सरस्वती यहाँ मध्यस्थ और साक्षी शक्ति के रूप में स्थित रहती हैं, जिनके बिना इडा और पिंगला भी निष्क्रिय हो जाती हैं।

ऋग्वेद और पतंजलि के महाभाष्य में इन सात नदियों को तालु में आकर मिलने वाला बताया गया है, जहाँ से वाणी, स्वर और चेतना का उद्गम होता है। तालु को स्मृतियों में ब्रह्म का निवास-स्थान कहा गया है। इस प्रकार सरस्वती केवल वाणी की देवी नहीं, बल्कि सम्पूर्ण चेतना, विवेक, स्वास्थ्य और आध्यात्मिक उन्नति की अधिष्ठात्री शक्ति हैं, जिनके बिना मानव जीवन की कोई भी प्रक्रिया सम्भव नहीं है।

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार सरस्वती प्रज्ञा-शक्ति अथवा मन:शक्ति का प्रतीक हैं। सरस्वती ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी हैं और प्रज्ञा ही मानव की वह विशिष्ट शक्ति है, जो उसे अन्य प्राणियों से पृथक् करती है। मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही बोलता है, जैसा बोलता है, वैसा ही कर्म करता है और कर्म के अनुसार उसका जीवन निर्मित होता है। इसी कारण वैदिक साहित्य में मन को मानव जीवन का मूल आधार माना गया है।

मन के दो रूप माने गए हैं—व्यष्टि और समष्टि। व्यष्टि मन व्यक्तिगत और सीमित होता है, जबकि समष्टि मन असीम, अनन्त और अत्यन्त शक्तिशाली है। सृष्टि की रचना के मूल में यही समष्टि मन स्थित है, जिसे देवता, अमृत-तत्त्व और अमर शक्ति कहा गया है। इस विराट शक्ति की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती हैं। वे ज्ञान का महासागर हैं, जिनसे कला, विज्ञान और विद्या की धाराएँ प्रवाहित होती हैं।

समष्टि मन स्वच्छ और निर्लेप होता है, जबकि व्यक्तिगत मन राग-द्वेष के कारण मलिन हो जाता है। मन जितना निर्मल और एकाग्र होगा, उतनी ही अधिक शक्ति वह सरस्वती से ग्रहण कर सकेगा। ध्यान और एकाग्रता के द्वारा मन की पात्रता बढ़ती है।

ज्ञान का स्वरूप प्रकाश है। सरस्वती उसी ज्ञान-ज्योति की अधिष्ठात्री हैं। ऋग्वेद में वाक्तत्त्व के रूप में उन्हें सृष्टि का मूल, सर्वव्यापक और तेजस्वरूप बताया गया है। इस प्रकार सरस्वती मानव चेतना, पवित्र बुद्धि और आनन्दमयी ज्ञानधारा की प्रतीक हैं, जो मनुष्य को विवेक, सद्बुद्धि और आत्मिक उन्नति की ओर ले जाती हैं।

निष्कर्षत: वेदों में वर्णित सरस्वती केवल एक देवी नहीं, बल्कि मानव की प्रज्ञा, बुद्धि और चेतनाशक्ति का सूक्ष्म आध्यात्मिक स्वरूप हैं। वे वाक्तत्त्व, ज्ञान, विवेक और सद्बुद्धि की अधिष्ठात्री हैं, जो मनुष्य को

सत्-असत् का भेद सिखाकर सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करती हैं। इडा, पिंगला और सुषुम्णा के समन्वय से सरस्वती शरीर, मन और आत्मा को शक्ति प्रदान करती हैं तथा अश्विनी देवों के साथ मिलकर शरीर-रचना, स्वास्थ्य और जीवन-ऊर्जा का संचालन करती हैं। सरस्वती ज्ञान का महासागर हैं, जिनमें ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि आकर समाहित होते हैं। वे रोगों का नाश करने वाली, शरीर की रक्षक और कामनाओं की पूर्तिकर्त्री हैं। इस प्रकार सरस्वती मानव जीवन में ज्ञान, स्वास्थ्य, शक्ति, विवेक और आध्यात्मिक उन्नति की केन्द्रीय आधारशिला हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *ऋग्वेद संहिता (सायण भाष्य सहित), सम्पादक: पं. सत्यव्रत सामश्रमी, प्रकाशक: चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, संस्करण: 2012*
2. *यजुर्वेद (वाजसनेयी माध्यन्दिन संहिता), सम्पादक: पं. सत्यव्रत सामश्रमी, प्रकाशक: चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण: 2010*
3. *अथर्ववेद संहिता (सायण भाष्य सहित), सम्पादक: पं. क्षेमकरण दास त्रिवेदी, प्रकाशक: चौखम्भा ओरिएण्टलिया, वाराणसी, संस्करण: 2008*
4. *शतपथ ब्राह्मण, अनुवादक: स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, प्रकाशक: चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2004*
5. *ऐतरेय ब्राह्मण, सम्पादक एवं अनुवादक: डॉ. राधाकृष्णन शर्मा, प्रकाशक: मोटीलाल बनारसीदास, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 1998*
6. *कौषीतकि ब्राह्मण, सम्पादक: ए.बी. कीथ, प्रकाशक: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 1920 (भारतीय पुनर्मुद्रण: 2005, चौखम्भा)*
7. *ताण्ड्य (पञ्चविंश) ब्राह्मण, सम्पादक: डॉ. श्रीनिवासाचार्य, प्रकाशक: चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 2007*
8. *पतंजलि महाभाष्य, सम्पादक: पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रकाशक: चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2011*
9. *डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, वेदविद्या, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज, 1964 (पुनर्मुद्रण: 2015)*
10. *उपनिषद् संग्रह (बृहदारण्यक, छान्दोग्य आदि), अनुवादक: डॉ. राधाकृष्णन, प्रकाशक: जॉर्ज ऐलन एंड अनविन, लंदन / भारतीय संस्करण: राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन 1953 / 2010*
11. *वैदिक देवों का आध्यात्मिक स्वरूप, लेखक: डॉ. रामगोपाल मिश्र, प्रकाशक: चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 2009*
12. *भारतीय दर्शन में वाक्तत्त्व, प्रो. हरिहरानन्द शास्त्री, प्रकाशक: मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2001*
13. *वैदिक प्रतीक और विज्ञान, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, प्रकाशक: ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, 2013*